व्यवस्थित शक्ति

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्था

यह सम्पूर्ण चराचर जगत कैसे चलता है? इस जगत के भीतर जीवन जीने वाले प्राणी कौन हैं? यह सम्पूर्ण दृश्यमान जगत क्या है? इन सबका उत्तर व्यवस्थित शक्ति के द्वारा दिया गया है। संसार को चलाने वाली व्यवस्थित शक्ति है। कुछ लोग इसे ईश्वर, कुछ लोग प्रकृति और कुछ लोग स्व–संचालित मानते हैं। ईश्वर की इच्छा के बिना सृष्टि का एक पत्ता भी नहीं डोलता। सृष्टि में जो कुछ भी दिखाई दे रहा है वह ईश्वरकृत है। नदी, पहाड़, झरने, वृक्ष, मनुष्य सब ईश्वरसृष्ट है। कुछ लोग यह मानते है कि सृष्टि को चलाने वाले व्यवस्थित शक्ति है। संयोग मिलकर सृष्टि को चलाते हैं।

सृष्टि में जीव और अजीव दो मुख्य तत्व है। जीव का जन्म–मरण, हलन–चलन आदि क्रियाएं होती रहती है। इसके कारण संसार में जीव भ्रमण करता रहता है। जीव संसार में अशुद्ध अवस्था में रहता है। उसे शुद्ध करना हमारा लक्ष्य है। कर्मों के संयोग से आत्मा और कर्म एक–दूसरे से बद्ध हो जाते है और आत्मा की स्वाभाविक गति अवरूद्ध हो जाती है। इस संसार में मनुष्य को यह भ्रांति है कि मैं सबकुछ कार्य करता हूं। मैं ज्ञाता हूं, मैं दृष्टा हूं, मैं पिता हूं, मैं माता हूं, यह पुत्र मेरा है, यह धन मेरा है और पद और प्रतिष्ठा मेरी है। इसी भ्रान्ति धारणा में मनुष्य जीवन जीता रहता है। किन्तु उसका यह विचार ठीक नहीं है। ये सब औपाधिक हैं। कर्ता भाव गलत है। यही सब दुःखों का कारण है।

सही दृष्टि आत्म विज्ञान है। मानव एक संयोग है। अकर्ता भाव का ज्ञान सभी दुःखों से मुक्त करा देता है। निष्काम भाव से कर्म करना चाहिए। जन्म से मृत्यु तक का समय एक फिल्म की तरह है। जैसे फिल्म में अनेक भाव आते जाते रहते हैं और तीन घंटे में फिल्म पूरी हो जाती है। दर्शक उसे देखकर हर्षविषाद का अनुभव करता है। फिल्म वास्तविक नहीं रहती। किन्तु तीन घंटे तक हमारा उससे ऐसा लगाव हो जाता है कि हम सबकुछ भूल जाते है और उसी को सत्य मान लेते है। इसी तरह इस संसार में जीवन से मृत्यु तक जो कुछ भी हम देखते हैं या करते हैं उसीको सत्य मानकर चलते हैं। जबकि यथार्थ इससे भिन्न है। जो व्यक्ति इस

बात को समझ लेता है वह वास्तविकता को समझ लेता हैं। कर्म व्यक्ति अकेले नहीं करता अनेक वस्तुओं का संयोग कर्म को कराता है। किन्तु मानव यह कहता है कि मैंने कार्य किया। कार्य में मानव एक निमित्त है। यही अज्ञान ही मनुष्य के बंधन का सबसे बड़ा कारण है।

किराये की दुकान पर समान रखकर दुकानदार बेचता है। ग्राहक आते है और सामान खरीदते है। जिससे लाभ–हानि होती है। हमने दुकान खोली है। सबके संयोग से हमारा कार्य हुआ है। सबने मिलकर धन इकट्ठा किया है। इसमें अनेक लोगों का सहयोग है। केवल अपने को कर्ता मानना अज्ञान है।

जीवन निर्माण में भी अनेक लोगों का योगदान रहता है। अनेक निमित्त और संयोग मिलकर सृष्टि चलाते है। इससे ही व्यवस्थित शक्ति कहा जाता है। इसी के संयोग से कार्य होता है। यदि मनुष्य कर्ता भाव को छोड़ दे तो उसका कल्याण हो जाये। जैसा मनुष्य का पूर्वजन्म का कार्य रहता है। उसी के अनुसार वर्तमान जीवन में सुख–दुःख, लाभ–हानि, जय–पराजय का सामना करना पड़ता है। मनुष्य के जैसे पूर्वजन्म के पुण्य–पाप होते है। वैसे संयोग हो जाते है। स्वस्थ व्यक्ति पलभर में अस्वस्थ हो जाता है। ऐसा इसलिए हुआ कि ऐसे संयोग इकट्ठे हो गये कि वह अस्वस्थ हो गया। कभी–कभी हम कुछ कार्य करते नहीं स्वयं ही हो जाता है तो यह मानना पड़ता है कि व्यवस्थित शक्ति ही सब कार्य करा रही है। कोई भी व्यक्ति दुःखी रहना नहीं चाहता। किन्तु फिर भी दुःख की प्राप्ति हो जाती है ऐसा क्यों? ऐसा इसलिए कि पूर्वजन्म में मैने जो बीज बोया था उसकी निष्पत्ति समय आने पर इस जन्म में हो रही है।

समय बड़ा बलवान होता है। अर्जुन के धनुष से बड़े–बड़े महारथी घबरा जाते थे। खराब समय आने पर गोपियों को लुटेरों ने लूट लिया अर्जुन कुछ नहीं कर सके। कर्मों के उदय के कारण मनुष्य को समय सबल और निर्बल बना देता है। अतः कर्ता भाव अज्ञानता है और अकर्ता भाव ठीक है। इसलिए कर्ता भाव से कोई कार्य नहीं करना चाहिए। अनेक संयोग मिलकर कोई कार्य करते हैं। केवल मैंने इस कार्य को किया यह कहना ठीक नहीं है। यह अज्ञानता है। यथार्थ दृष्टिकोण जीवन दिशा को खोलने वाला विषय है। यथार्थ दृष्टिकोण हमारे भीतर वर्तमान आत्मा का शुद्ध दर्शन है।

आत्मा शरीर से भिन्न है। यह भेदविज्ञान है। छः द्रव्य समुदाय जहां होता है वह अपने आप गति करता है। मनुष्य कर्त्ता नहीं है जगत का संचालन करना ईश्वर के हाथ में है। जैसा हम कार्य करते हैं वैसा प्रभाव आत्मा पर पड़ता है। आत्मा कर्मानुसार विभिन्न गतियों में संचरण करता है। कर्म का आवरण हटते ही आत्मा शुद्ध रूप में स्थित हो जाता है। आत्मा का भाव ज्ञाता और दृष्टा का है। वह सच्चिदानन्द है। जगत नियन्ता व्यवस्थित शक्ति है। जगत में जितने भी प्राणी हैं, सब निर्दोष हैं। लेन–देन शेष है, जो मैं दे रहा हूं वह कर्जा उतार रहा हूं। यह पूर्वजन्म के कार्य का निपटारा है।